Class Notes for students of B.A. Geography Hons. part – II, Paper – III, Unit – V

बिहार में कृषि आधारित उद्योग
Agro - based industries in Bihar

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल

वस्त्र उद्योग

कृषि उत्पादन में मात्रात्मक विविधता पाई जाती है । कृषि उत्पादन पर आधारित उद्योगों में से कुछ ऐसे हैं जिनकी अवस्थिति संबंधित क्षेत्र से बाहर होती है । वस्त्र उद्योग इसका उदाहरण है । यद्यपि वस्त्र उद्योग बिहार की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में गौण स्थान हासिल करता है तथापि इनकी संरचनात्मक एवं क्रियात्मक उपस्थिति है ।

बिहार में वस्त्रोद्योग की स्थानिक संरचनात्मक विशेषताएं: सूती, रेशमी तथा ऊनी वस्त्रों का मानव जीवन में काफी महत्व है । बिहार राज्य में आर्थिक महत्व की कपास की खेती नहीं होती है अर्थात सूती वस्त्र उद्योग के लिए के विकास का आधार कृषि से प्राप्त कच्चा माल नहीं है । सूती वस्त्र के लिए विस्तृत बाजार है । परिवहन और श्रमिकों के अनुकूल उपलब्धता इसे परंपरागत उद्योग की पहचान प्रदान करती है । बिहार के सूती वस्त्र मिलों में पटना, गया, मोकामा और डुमरांव को अवस्थितिगत पहचान प्राप्त हैं । बाहर से प्राप्त कपास पर आधारित सूती धागे बनाने का उद्यम फुलवारीशरीफ, पटना, मोकामा, सिवान, भागलपुर, पूर्णिया तथा पंडौल आदि में अवस्थित है । सूती वस्त्र उद्योग के इकाई के रूप में तथा होजरी के कारखानों का विकास भी हुआ है । पटना, हाजीपुर में मुख्य रूप से मुजफ्फरपुर, भागलपुर, गया, पूर्णिया और छपरा जैसे नगरों में पोषक और होजरी के मिल हैं । इसके अलावा कुटीर उद्योग के रूप में गया का मानपुर मोहल्ला और बिहारशरीफ का सोहडीह तथा छज्जू मोहल्ला सूती कपड़ा के निर्माण के लिए महत्व रखते हैं । खादी ग्राम उद्योग तथा हथकरघा के साथ-साथ शक्ति करघा के द्वारा भी सूती वस्त्र की संरचनात्मक विशेषताएं निरूपित होती है ।

सूती वस्त्र उद्योग के अलावा **रेशमी वस्त्र उद्योग** का भी काफी महत्व है । रेशमी वस्त्र उद्योग की संरचना में भागलपुर में नाथनगर, मुज़फ़्फ़रपुर, गया एवं दरभंगा का नाम आता है । बिहार राज्य के वैशाली, भभुआ, नालंदा तथा नवादा में भी रेशमी वस्त्र का उत्पादन होता है ।

जाड़े में प्रयोग के लिए आवश्यक **ऊनी वस्त्र** का बिहार में औद्योगिक महत्व नहीं के बराबर है । स्थानीय भेड़ों से प्राप्त उन पर आधारित कंबल, मोटे चादर तथा कालीन का उत्पादन औरंगाबाद के ओबरा तथा दाउदनगर, मुंगेर, पटना, मुजफ्फरपुर जिले में स्थानीय स्तर पर किया जाता है । खादी ग्राम उद्योग द्वारा भी ऊनी वस्त्र एवं कंबल बनाए जाते हैं ।

बिहार में वस्त्र उद्योग की क्रियात्मक परिचालन विशेषताएं: वस्त्र उद्योग के क्रियात्मक परिचालन के लिए प्रादेशिक परिप्रेक्ष्य में कच्चे माल की अनुकूल उपलब्धता नहीं है । साथ ही बिहार राज्य सामान्य औद्योगिक वातावरण को भी बहुत सकारात्मक नहीं बना सका है ।

(i) बिहार का सूती वस्त्र उद्योग कुटीर और लघु स्तर पर मुख्यत: सूत काटने और कपड़ा बुनने से संबंधित पाया गया है । सूत की आपूर्ति कानपुर, अहमदाबाद तथा बनारस से अधिकांशत: होती है ।

(ii) सूती वस्त्र के बड़े एवं संगठित उद्योग रुग्णावस्था में कार्य कर रहे हैं या बंद है । गया का मिल बंद है । मोकामा में सूत तैयार करने और डुमराव में कपड़ा बनाने का काम होता है ।

(iii) सूती वस्त्र उद्योग में हथकरघा तथा होजियरी का विशेष महत्व है । राज्य में लगभग 25000 से अधिक हस्तकरघे हैं जिसमें लगभग 1,00,000 लोग कार्य करते हैं ।

(iv) बिहार राज्य में हथकरघा व रेशमीवस्त्र निदेशालय के अधीन रेशमी वस्त्रोद्योग के क्रियात्मक परिचालन में उन्नयन आया है । इस क्षेत्र में भागलपुर को राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है ।

(v) रेशम उद्योग के विकास के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता अहम है । मलबरी कीटपालन, वृक्षारोपण, मलबरी सूत कताई-बुनाई आदि कार्यों में हाल तक कुल 275 व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया गया है ।

(vi) राज्य में केंद्र तथा राज्य सरकार के 15 करोड रुपए की लागत से मलबरी, तसर एवं अंडी रेशम वस्त्र की एक-एक योजना प्रस्तावित है ।

(vii) बिहार राज्य में वस्त्रोद्योग के क्रियाशील परिचालन में सस्ते एवं प्रचुर श्रमिकों,विस्तृत बाजार तथा परंपरागत प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण से क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावना है ।

स्रोत: http://www.udyogmitrabihar.in/biada/

कृषि उत्पादन पर आधारित अन्य उद्योग

बिहार राज्य में खाद्य उपयोगी सामग्रियों के उत्पादन से संबंधित कृषि उत्पादन तथा कृषि से जुड़ी अन्य आर्थिक क्रियाओं पर आधारित उद्योगों में से फल, सब्जी, मुर्गीपालन, शुगर पालन, दुग्ध उत्पादन, मत्स्य उत्पादन, बेकरी, बिस्कुट, टॉफी, क्रीम, वनस्पति घी उत्पादन आदि इकाइयों का महत्व है । हाजीपुर में फल और सब्जी पर आधारित अनेक औद्योगिक इकाइयां हैं । बिहार फल एवं सब्जी विकास निगम लिमिटेड एक वृहत औद्योगिक इकाई है । भागलपुर में मोडर्न इंडस्ट्रीज लिमिटेड एक दूसरी वृहत औद्योगिक इकाई है । अन्य प्रमुख उद्योग हैं:

- दुग्धोत्पादन,
- मत्स्योत्पादन,
- शहद उत्पादन,
- फूल उत्पादन
- फल उत्पादन इत्यादि पर आधारित उद्योग राज्य की औद्योगिक अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान करने में अहम भूमिका निभाने की क्षमता तथा अवसर रखते हैं । सुधा दूध उत्पादन का बिहार की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में योगदान सफलता की कहानी है ।

- सन्दर्भ: बिहार की भौगोलिक समीक्षा, वसुन्धरा प्रकाशन, डॉ नंदेश्वर शर्मा